SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed,
Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व संवेगात्मक बुद्धि में परस्पर संबंध

रेनू चौधरी, शोद्यार्थी, आई आई एस (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) जयपुर, Enroll. No.IISU/2022/ADM/33622
डॉ संजय केडिया शोध निर्देशक, एजुकेशन विभाग , आई आई एस (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) जयपुर

विद्यार्थी और शिक्षा का एक दूसरे से बड़ा ही गहरा संबंध है। शिक्षा मनुष्य के लिए खान-पान से भी अधिक आवश्यक है। शिक्षा प्रत्येक समाज और राष्ट्र के लिए उन्नति की कुंजी है। अज्ञानता मनुष्य के लिए अभिशाप है, शिक्षा के द्वारा ही हम सत्य और असत्य को जान पाते हैं। विद्यार्थी राष्ट्र की सबसे बड़ी ताकत और संपत्ति होते हैं। विद्यार्थी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना होता है विद्या + अर्थी जिसका अर्थ है विघा प्राप्ति का इच्छुक।

डॉ राधाकृष्णन ने लिखा है- "शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए। इस कार्य को किए बिना शिक्षा अनुवर और अपुर्ण है।"

शैक्षिक उपलब्धि- शैक्षिक उपलब्धि का अभिप्राय छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रात्क अभिव्यक्ति से है। शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है दूसरे शब्दों में विद्यार्थियों द्वारा किए जाने वाले उस कक्षा को शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं जो विद्यार्थी द्वारा पूरे सत्र में की जाती है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को कक्षा का वातावरण, संवेगात्मक बुद्धि, पारिवारिक वातावरण, आर्थिक स्तर, विद्यालयी वातावरण, रुचियां, आध्यात्मिक बुद्धि आदि घटक प्रभावित करते हैं।

चार्ल्स-इ स्किनर के अनुसार- "शैक्षिक कार्य प्रक्रिया का अंतिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है, जो विद्यार्थियों को कार्य के बारे में अंतिम जानकारी प्रदान करती है।"

संवेगात्मक बुद्धि- स्वयं और दूसरों की सांवेगिकता और प्रतिभा को देखने, समझने व अंतर स्थापित करने की क्षमता। संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति विशेष कि उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा उनकी ऐसी उचित अनुभूति एवं अभिव्यक्ति करने कराने में इस प्रकार मदद करें कि वह ऐसी वांछित व्यवहार अनुक्रियायें कर सके जिनसे उसे दूसरों के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपना समुचित हित करने हेतु अधिक से अधिक अच्छे अवसर प्राप्त हो सके।

गोलमैन के अनुसार- "संवेगात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति की वह योग्यता है, जिसमें वह अपने साथ-साथ दूसरे व्यक्तियों की संवेदनाओं को महसूस कर सकें जो की विभिन्न परिस्थितियों में उत्पन्न हुई है "।

शैक्षिक उपलब्धि व संवेगात्मक बुद्धि में पारस्परिक संबंध

संवेगात्मक बुद्धि संवेगों को जानने और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रयोग करने की योग्यता है जो दूसरों के प्रति हमारे संबंधों को सार्थक रूप से प्रभावित करती है। संवेगात्मक को ही पहले सामाजिक बुद्धि कहा व समझा जाता था। लेकिन विद्यालय में संवेगात्मक बुद्धि को

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

विकसित करने के लिए कोई प्रयास नहीं किए जाते। यदि विद्यालय स्तर पर ही भावनात्मक बुद्धि(संवेगात्मक) का विकास बच्चों में किया जाए तो वे बड़े होकर सफल नागरिक बन सकते हैं तथा उनका शैक्षिक व व्यावसायिक भविष्य अधिक उज्जवल बन सकता है। अतः विद्यार्थियों के लिए संवेगात्मक बुद्धि का विकास अत्यंत आवश्यक है जो विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान होते हैं उनकी शैक्षिक उपलब्धि उन विद्यार्थियों से बेहतर होता है जो की संवेगात्मक बुद्धिमान नहीं होते। संवेगात्मक रूप से स्थिर विद्यार्थी संवेगों को भली प्रकार से व्यवस्थित कर सकता है। विद्यार्थी से आशा की जाती है कि वह सामाजिक कुशलता, सकारात्मक अभिव्यक्ति, सृजनात्मक चिंतन का विकास करे एवं इन सभी के विकास के लिए विद्यार्थी को संवेगात्मक रूप से दृढ़ होने की आवश्यकता होती है। जिसके परिणामस्वरुप विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होगी और यदि विद्यार्थी संवेगात्मक रुप से अस्थिर है तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न स्तर की होगी परिणामस्वरुप विद्यार्थी के संवेगात्मक बुद्धि का उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही प्रभाव पड़ते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि व शैक्षिक उपलब्धि में संबंध पाया जाता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने में उनके संवेगात्मक स्तर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि के छात्र स्वयं के संवेगों के प्रति जागरूक होते हैं।